श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१

सम्यग्ज्ञान विशारद

अभ्यासक्रम क्रं. : 4

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆

ऐनरोलमेन्ट नंबर FH-008

शहर Answer Sheet 2024-22

विद्यार्थी का नाम

प्रश्न-१ रिक्त स्थान

(१) प्रायश्चित
(२) तेजस
(३) यह
(४) ध्यान रूपी
(५) कषाय
(६) उपर साध्वीजी
(७) "तत्वार्थ सूत्र"
(८) अपवर्तना
(९) आचारवान
(१०) श्रुतकेवली
(११) सुक्ष्म दोष
(१२) जिनशासन
(१३) समुद्घात
(१४) हंस परमहंस
(१५) मांगलिक
(१६) अंतः करण
(१७) कषाय
(१८) हरिभद्र
(१९) तत्वार्थसूत्र
(२०) अतिचार

प्रश्न-२ एक ही शब्द में

(१) आलोचना
(२) संज्ञी मनुष्य
(३) सौधर्मेन्द्र
(४) उर्मतत्व
(५) महर्षि पतंजलि
(६) सूक्ष्म संपराय
(७) विगति
(८) रत्नातीत
(९) केवली समुद्घात
(१०) सूरपाल राजा
(११) श्री सिद्धसेन गणि
(१२) अरिहंत भगवंत
(१३) श्री गजसार मुनि
(१४) नये कर्म
(१५) जिनसाधु

प्रश्न-३ शब्दार्थ

(१) तुम्हारा
(२) आकार
(३) समुद्घात
(४) छोड़कर

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ

(१)	७	(६)	२
(२)	९	(७)	६
(३)	१	(८)	४
(४)	१०	(९)	५
(५)	८	(१०)	३

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

(१) २
(२) ४
(३) ८
(४) ९
(५) २६
(६) १५००
(७) ५
(८) २०
(९) ५
(१०) ६

प्रश्न-६ ✓ या ×

(१) ×
(२) ✓
(३) ×
(४) ✓
(५) ×
(६) ✓
(७) ×
(८) ✓
(९) ×
(१०) ✓

प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर

(१) १२
(२) ५
(३) १६
(४) २२
(५) १४
(६) ६
(७) २०
(८) १८
(९) १०
(१०) ९

	+		+		+		+		+		+		+		=	

प्रश्न-१ मिले हुए गुण | प्रश्न-२ मिले हुए गुण | प्रश्न-३ मिले हुए गुण | प्रश्न-४ मिले हुए गुण | प्रश्न-५ मिले हुए गुण | प्रश्न-६ मिले हुए गुण | प्रश्न-७ मिले हुए गुण | प्रश्न-८ मिले हुए गुण | कुल गुण

रीमार्क _____ जांचनेवाले की सही _____

प्रश्न - ८

१. तिर्थंकरों का जन्म महोत्सव - इस ढाई द्विप में भरत ऐरावत और महाविदेह क्षेत्र में जन्में सभी तीर्थंकरों के जन्म समय पर स्वयं का आसन कंपायमान होते ही सौधर्मेन्द्र अवधिज्ञान से जानकर, सुघोषाघंट बजवाकर सभी सुरेंद्र, असुरेंद्र सभी साथ आकर विनय पुर्वक अरिहंत भगवान को हाथ में ग्रहण करके मेरुपर्वत के ऊपर ले जाकर जन्माभिषेक करने के पश्चात जिस तरह उद्घोषणा करते है। "महाजन जिस मार्ग पर जाये वही मार्ग" ऐसा जानकर भव्यजनों के साथ स्नात्रपीठपर स्नात्र करके शांती की उद्घोषणा करता है।

२. आलोचना के दस दोष है → ① यदि मैं गुरु की वैयावच्च करूंगा तो मुझे प्रायश्चित थोडा ही आयेगा, ऐसे आशय से गुरु की बहुत वैयावच्च करके आलोचना ले वो "आकंप" दोष है। ② अमुक आचार्य सभी को हल्का प्रायश्चित्त देते है, ऐसा अनुमान करके उनके पास जाकर आलोचना ले तो वो "अनुमान दोष" दुसरा है। जो-जो बडे दोष लगे है, उन्हे आलोचित करे पर छोटे दोषो की अवगणना करके उनकी आलोचना नही लेना वो "बादर दोष" है।

३. पांच प्रमाद से रहीत, संज्वलनादि, नोकषाय के मंदता से जिसकी अप्रमत्त वृत्ती हो जाती है ऐसा साधु अप्रमत्त संयत गुणस्थान में आता है। जैसे जैसे संज्वलन कषाय भी मंद-मंद होते है वैसे वैसे साधु की अप्रमत्त दशा विकसित होती जाती है। विषयसुख सुलभ होनेपर भी उनकी ओर रुचि नहीं होती, वैसे जीव उत्तम श्रेष्ठ तत्व को प्राप्त करता है।

४. तैजस समुद्घात → तेजोलेश्या अथवा शीतलेश्या का प्रयोग करते समय तैजस लब्धीवाला जीव अपने आत्मप्रदेशों को शरीर के बाहर निकालता है, तैजस नामकर्म के बहुत सारे पुद्गलों की उदीरणा करता है, उस समय तैजस वर्गणा के पुद्गलों को ग्रहण कर तेजोलेश्या अथवा शीतलेश्या का प्रयोग करता है।

५. उमास्वातिजी ने अपने जिवनकाल में अनेक ग्रंथो की रचना की इनमेंसे "तत्वार्थ सूत्र" पुज्यपाद उमास्वातीजी म. की अद्भुत ज्ञानशक्ति का परिचय कराने वाला अमुल्य ग्रंथ है। जिनशासन के त्रिकाल सत्य सिद्धांतो का ये खजाना है, आगमग्रंथो के महत्व के सूत्रो का अपूर्व संग्रह है। यह सूत्र जिनशासन का अकरूप ग्रंथ है, इसमें जीवों का स्वरुप दर्शाता जीवविज्ञान है, जड का परिचय कराता जड विज्ञान है, विश्व के स्वरुप को समझाता लोक-अलोक का विज्ञान है, शरीर को समझाता आरोग्यशास्त्र है, आत्मा की अनंत शक्ति को समझाने वाला आत्मज्ञान भी है। मन का अहसास कराता मानसशास्त्र भी यहां है